प्रातः क्लास 31/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझाते हैं इस रथ द्वारा। बाप ने समझाया है मनुष्य को कब भगवान नहीं कहा जा सकता। मनुष्य में दैवीगुण और आसुरी गुण हो सकते हैं। इसलिए मनुष्य को कब भगवान नहीं कहा जा सकता। इन(ल0ना0) को भी भगवान–भगवती नहीं कहा जा सकता। कायदे के विरुद्ध है। मनुष्य को मनुष्य से देवता बना सकते हैं भगवान–भगवती नहीं; क्योंकि प्रवृत्ति मार्ग है। तो अपन को भगवान कहने वा मनुष्य को भगवान कहने अथवा परमात्मा को सर्वव्यापी कहने से भारत की हालत देखो कैसी हो गई है। बाप आकर समझाते हैं एक ही भूल से भारत कितनी दुर्गति हो जाती है। अभी सभी दुर्गति में हैं। यह भी कोई मनुष्य समझ नहीं सकते हैं। मनुष्य है ही पत्थर बुद्धि। गायन भी है पत्थर बुद्धि, पारस बुद्धि, आसुरी बुद्धि, ईश्वरीय बुद्धि। ईश्वर भी जरूर यहाँ आकर बुद्धि देंगे। वहाँ बैठे तो नहीं देंगे ना। यहाँ आकर बच्चों को सुनहरी बुद्धि देते हैं। सुनहरी बर्तन बनाते हैं। अभी तो लोहे का बर्तन है। कितना रात–दिन का फर्क है। तुम बच्चे जानते हो हम स्वर्ग के मालिक थे। उस समय और कोई भी नहीं था। अभी तो तुम स्वर्ग के मालिक नहीं होना। थे जरूर। फिर 84 जन्म लेते2 नीचे उतरते हो। 84 से ऊपर तो कोई जा नहीं सकते। 84 जन्म लेते नीचे ही उतरते हैं। सतो से रजो, तमो में गिरना होता है। मनुष्य सृष्टि भी पहले नई फिर पुरानी जरूर होती है। पुराने को कहा जाता है कलियुग। अभी तुम जानते हो आत्माएँ पहले स्वर्गवासी थी। फिर अभी नर्कवासी बनी हैं। यह बाप ही बच्चों से पूछते हैं तुम स्वर्गवासी हो या नर्कवासी हो? बाप के सिवाय तो और कोई पूछ न सके; क्योंकि सभी हैं नर्कवासी वैश्यालय में रहने वाले तो पूछ कैसे सकते हैं। पूछने वाला तो फिर इनके विपरीत हो। शिवालय कहा ही जाता है सतयुग को; क्योंकि शिवबाबा ने स्वर्ग स्थापना की थी। वे ही नई सृष्टि रचते हैं; परन्तु मनुष्य भगवान को ही नहीं जानते। रचयिता बाप की ही कितनी ग्लानि की है। बाप कहते हैं मैं कभी ठिक्कर भित्तर में नहीं आता हूँ। मैं तो एक ही बार आता हूँ जबकि नई सृष्टि की स्थापना और पुरानी सृष्टि का विनाश कराना होता है। नई सृष्टि थी जो फिर अब पुरानी बनी है। कितनी सहज बात है। जैसे कि एक कहानी है। इनका नाम ही है सहजराजयोग। पढ़ाई भी सहज है। याद भी सहज है। मनुष्य बैरीस्टरी पढ़ते हैं तो वह पढ़ाई भी याद रहती और पढ़ाने वाले टीचर भी याद रहते हैं। उनसे योग भी लगाते हैं। तुम कहेंगे शिवबाबा हमारा टीचर बनकर हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। हमारी आत्मा अपवित्र भ्रष्टाचारी थी उनको पवित्र श्रेष्ठाचारी बाप ही बनाते हैं। भ्रष्टाचारी अक्षर सतयुग में होता ही नहीं। यहाँ है भ्रष्टाचारी। वह भी कब से पतित बनना शुरू हुआ है जब से रावण ने प्रवेश किया है। अभी बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। तुम मेरे बच्चे थे। सतयुग में तुम कितने सुखी थे। कितनी तन्दुरुस्ती थी। अभी तो अपवित्र बनने से कितने दुखी बने हो। अभी बाप कहते हैं बिल्कुल खबरदार रहो। कहते हैं ना "भज रे सरण बाज कान टोप जावेगा। यह भी अभी का दृष्टान्त है। थोड़ा भी देहअभिमान में आया तो माया एकदम कान टोप लेगी। इसलिए कोशिश कर देहीअभिमानी बनना है। ऐसे भी नहीं सभी 100% पास होंगे, नहीं। नम्बरवार तो होते ही हैं। तुम जानते हो दुनिया में किसी के भी बुद्धि में नहीं है। भगवान बाबा है। बुलाते भी हैं मीठे बाबा आओ। बाबा अक्षर में ही बहुत लव है। बाबा से ही वरसा मिलता है। दादा, चाचा, साले, बहनोई से वरसा मिलता है क्या? एक बाप ही है जिससे वरसा मिलता है। सभी को बाप समझाते हैं इस समय तुमको तीन बाप हैं। बड़े बाबा से बेहद का वरसा मिलता है। छोटे बाप से हद का वरसा। तीसरे बाबा(प्र0 पिता ब्रह्मा) से कुछ भी नहीं मिलता। फिर तुम इनका फोटो भी क्यों लेते हो। अभी तो तुमको बेहद का बाप मिला है सिर्फ वह इस द्वारा देते हैं। कहते हैं मैं तुम्हारे मिसल शरीर नहीं लेता हूँ। मैं पावन बनाये सभी को अशरीरी बनाता हूँ। अशरीरी भव। शरीर से डिटेच होना गोया मरना सीखना। यह तो बहुत खुशी से अशरीरी होना है; क्योंकि नर्क से स्वर्ग में जाते हो। तो अन्दर में खुशी होनी चाहिए ना। खुशी

से शरीर को छोड़ देते हैं। सन्यासी आदि जो दृष्टान्त देते हैं सर्प का, भ्रमरी का, कछुए का वह सभी इस समय तुम्हारे से लगता है। तुम अज्ञानी कीड़े को ज्ञान की भूँ2 करते हो। वह सभी भक्ति की भूँ2 करते हैं। भक्ति है अथाह। ज्ञान की भूँ2 तो एक ही है। एक ही बात की भूँ2 चलती है। भक्तिमार्ग में तो कितने यज्ञ, तप, दान पुण्य आदि करते हैं। कितना भटकते हैं। तुम कितने रॉयल हो। सिर्फ एक बात कहते हो कि बाप को याद करो। बाप को तुमने ही निमंत्रण दे बुलाया है हे पतित–पावन.....वह लोग कितना ठाट–बाट से रहते हैं। भक्ति में यज्ञ–तप, दान–पुण्य आदि करते तुमने कितना खर्चा किया है। इसमें तो कोई खर्चा नहीं। तुमने देखो किसको बुलाया है। जो सर्व की सद्गति करने वाला है फिर उनकी क्या सजावट आदि की है कुछ भी नहीं। तुमको तो पता भी नहीं पड़ा कि बाप आया किस समय। तुम अपने जन्म दिन पर कितना शादनामा आदि मनाते हो। बात मत पूछो। खुशी में आ जाते हैं भगवान ने बच्चा दी। किसकी कृपा से? गुरु की कृपा से। अच्छा वह फिर बीमार हो पड़ता, मर जाता है फिर क्या कहते हैं, गुरु को तो बहुत गालियाँ देते हैं। अरे, तुम उनको क्यों गाली देते हो। गुरु की कृपा से भगवान ने दिया तो उनसे लड़ो ना। तुम गुरु से क्यों लड़ते हो। यह सभी है भक्तिमार्ग की बातें। यहाँ तो तुमको बच्चे आदि कुछ भी चाहिए नहीं। जानते हो यहाँ के बच्चे तो बिच्छू–टिण्डन, नाग–बलाएँ हैं। बिचारी हैरान हो जाती है कहाँ कोई बच्चों को सम्भाले तो हम बन्धन से मुक्त हो सर्विस में लग जावेंगे। बाप कहते हैं बच्चे का बन्धन है तो कोई को दे दो। भगवान से बड़ी मेहनत कर बच्चा लेते हैं तो रग टूटती नहीं। यहाँ भी कोई समय ख्यालात आ जाता है। हमको बच्चा नहीं है। बच्चे के लिए हैरान होते रहते हैं। भल कहते हैं बाबा आप ही हमारे बच्चे हो। फिर भी बच्चे ह(क)ी चाह रहती है। अरे यह बच्चा तो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। बच्चा हो तो ऐसा। जो भी ब्राह्मण बनते हैं सभी विश्व के मालिक बनते हैं। फिर उनमें है नम्बरवार पद। जैसे कहते हैं भारत हमारा सबसे अच्छा देश है कब फिर देखो भारत की ग्लानि करते हैं। इस पर एक गीता है। अभी तुम समझते हो हम भारत के मालिक थे। स्वर्गवासी थे। अभी नर्कवासी हैं। कितनी बड़ी हिंसा करते हैं। जैसे कुत्ते का मिसाल देते हैं वह अपना ही खून बैठ चूसते हैं। इसमें बड़ा मज़ा आता है। यह भी एक/दो का खून चूसते हैं। काम कटारी चलाये एक/दो का खून करने में बड़े खुश होते हैं। एक/दो को कितनी गालियाँ देते हैं। उल्लू के बच्चे गदहे के बच्चे। एक मैजिस्ट्रेट ने कहा– तुम तो गदहा हो तो उसने बोला, हम गदहा तो तुम भी गदहा। हम मनुष्य तो तुम भी मनुष्य। वह कुछ कह न सका। जो उसने कहा सो उसने रिपीट किया। कितनी गालियाँ देते हैं। इनको कहा ही जाता है रौरव नर्क। तो बाप बैठ समझाते हैं यह भक्ति नहीं है। यह ज्ञान एक ही बाप देने वाला है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। कोई मनुष्य को यह पता नहीं है। विद्वान, आचार्य, शंकराचार्य आदि उनके बापदादा कोई भी नहीं जानते। उनका तो बापदादा है ना। शिवबाबा का तो कोई बाप दादा नहीं है। वही बैठ समझाते हैं। कृष्ण तो होता ही है सतयुग में। कृष्णभगवानुवाच कहना तो नम्बरवन मूर्खता है। कितने बड़े2 नाम से गीताएँ हैं– टैगोर गीता, गंगेश्वर गीता; परन्तु गीता को जानते ही नहीं। बाप कहते हैं कृष्ण भगवान है नहीं। कृष्ण ने तो पूरे 84 जन्म लिए। भगवान फिर जन्म–मरण में आता है क्या। निराकार भग0 तो एक ही है। उनका नाम है शिव। बाकी यह ल0ना0 आदि देवताएँ हैं। ब्रह्मादेवताएनमः.....फिर कहेंगे शिव परमात्मायनमः। ऐसा कहते जानते हुए भी फिर भी गालियाँ देते रहते। बाप कहते हैं यह कोई नई बात नहीं है। ड्रामा बना हुआ है। भक्ति में जो कुछ होता आया है वह फिर भी होगा। यह बना बनाया खेल है। बनी बनाई बन रही.....अनहोनी तो कोई है नहीं। ड्रामा में जो नूँध है सो जरूर होगा। यह चक्र फिरता रहता है। यह है तमोप्रधान आयरनएजेड दुनिया। भल मनुष्य समझते हैं 40 हजार वर्ष पड़े हैं। गीता आदि शास्त्रों से तो यह बातें निकाली हैं। कलियुग अजन छोटा बच्चा है। गीता की कितनी कॉपी करते हैं। बाहर में जाते हैं प्रचार करने। गीता है पहला2 धर्मशास्त्र। गीता जरूर सभी तरफ होगी। समझते हैं पहले भारत खण्ड ही था। उनको ही यह धर्मशास्त्र है। तो जरूर कोई ने बनाया होगा। तो उसमें कृष्ण का नाम ठोक दिया है। अभी गीता तो है मनुष्यों की बनाई हुई। भक्ति मार्ग की। बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग में गुरु तो सभी करते हैं; परन्तु उनको गुरु नहीं कहा जाता।

सदगति करने वाला सच्चा गुरु एक ही है। सद्गति अर्थात् पावन बनना। वह तो एक ही पतित–पावन बाप है। हरेक बात अच्छी रीत समझना चाहिए। आत्मा ही समझती है। आत्मा ही पढ़ती है। आत्मा और जीव है। दोनों में बड़ा कौन है? सब कहेंगे आत्मा अविनाशी है वह कब कटती मरती नहीं। शरीर से आत्मा निकल जाती है तो बस। शरीर को टुकड़ा2 कर दो। आत्मा तो अविनाशी है ना। तो अपन को आत्मा समझना चाहिए या शरीर? बाप बैठ समझाते हैं बच्चे तुम आत्माएँ पतित बन गये हो। अभी पावन बनने लिए मुझ बाप को याद करो। यह बात फिर तुम कोई से कब नहीं सुनेंगे। इस समय ही तुमको ट्रान्सफर होना है। आत्मा जो पतित है वह पावन बननी है। पावन बन पावन दुनिया में जाना है। बाप कहते हैं मेरी दाढ़ी की लज्जा रखो। कोई बुरा काम मत करो। तो ब्रह्मा को भी दाढ़ी दे देते हैं। विष्णु और शंकर को नहीं दिखाते। देवताओं को तो दाढ़ी आदि होते ही नहीं। इसमें भी मेहनत करनी पड़ती है ना। वहाँ मेहनत की बात नहीं। इस मेहनत से भी बाबा छुड़ा देते हैं। इन ल0ना0 को देखो कैसी फर्स्ट क्लास सिकल है। सो भी आधा कल्प के लिए तुम छूट जाते हो। वन्डर आफ वर्ल्ड है स्वर्ग। खुदा का बगीचा। अभी तो है रावण का जंगल। यह ही जानते हो बरोबर विख से जन्म लेते हैं, भ्रष्टा0 हैं। यह भी तुम जानो और क्या जाने। भगवानुवाच बच्चे यह जो सन्यासी आदि अपन को ईश्वर कहलाते हैं यह हैं सबसे बड़ी असुर। एक एम0पी0 ने भी कहा था कि यह .... रावण राज्य है; परन्तु अपन को रावण थोड़े ही समझते हैं। राज्य ही रावण का है तो खुद फिर राम राज्य में है क्या; परन्तु बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि बन गये हैं। कितनी अपनी ग्लानि करते हैं। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यह कोई साधु महात्मा नहीं। यह तो बाप इस रथ में आते हैं परमधाम से। बाप कहते हैं मुझे आना ही पड़ता है। तुम बच्चे जानते हो हम आत्माएँ शिवबाबा के बच्चे हैं। फिर प्रजापिा ब्रह्मा के एडाप्टेड बच्चे भाई वह नहीं जाते हैं। सभी कहते हैं आदम–बीबी। आदिदेव–आदिदेवी। जगत–अम्बा है तो जरूर जगत पिता है। बाप को तो सदैव बाबा ही कहा जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा और सरस्वती गाई जाती है। जिसको अम्बा कहते हैं। उन पर बल भी चढ़ते हैं। तो यह अभी की बात है। शिव पर बल चढ़ते हैं। ब्रह्मा पर बल चढ़ना कब नहीं देखेंगे। लक्ष्मी को भी माता कहते हैं। वह है विश्व की महारानी। इस समय तुम मम्मा–बाबा कहते हो। बाबा ने समझाया है इन द्वारा तुमको एडाप्ट करता हूँ तो यह वाइफ हो गई ना। तुम्हारी बड़ी अम्बा उनकी यह निशानी। और फिर सबसे बड़ी नदी ब्रह्मपुत्रा फिर है सरस्वती गंगा। एक ही इस नदी का मेल सागर से होता है। जिसको संगम कहते हैं। बाप इसमें प्रवेश करते हैं। इनको कहा जाता है आत्माएँ और परमात्मा अलग रहे बहू काल....यहाँ आकर सभी उस एक बाप को याद करते हैं। आत्मा के दो बाप तो हैं ना। वह है सच्चा फादर। यह झूठा। कितने बाप तुमने लिए हैं? (84) फीचर्स तो सभी जन्म में बदलते जाते हैं। फिर वही फीचर्स 84 जन्मों के बाद लेंगे। आत्मा में अनादि अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। जो आत्मा को ही बजाना है। जिस शरीर से जो पार्ट बजाया वही शरीर से वही पार्ट फिर बजावेंगे। बाप कहते हैं यह बना बनाया ड्रामा है। इसमें जरा भी फर्क नहीं। हरेक जन्म की एक्ट अलग2 है। यह अनेक बार रिपीट हुई है। होती रहती है। कितना गुह्य ज्ञान है। कितनी इसमें समझ चाहिए। भक्तिमार्ग में कितनी मेहनत करते हैं। हठयोग आदि सिखलाते हैं बाप आकर तुमको 21 जन्मों लिए सभी तकलीफों से दूर कर देते हैं। तो ऐसे बाप को कितनी खुशी से याद करना चाहिए। यहाँ है माया के सात वन्डर्स। तुम समझते हो स्वर्ग कितना बड़ा वन्डर है। होकर गया है तब तो सभी को याद पड़ता है। कोई मरता है तो कहते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ। तो जरूर नर्कवासी था। तुम भी नर्कवासी हो। फिर जब मरेंगे तब स्वर्ग में जावेंगे। तुम बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। आप आओ तो हम आपको बतावें तुम सच2 स्वर्गवासी कैसे बन सकते हो। स्वर्गवासी थे इतने वर्ष हुए, अभी नर्कवासी हो फिर स्वर्ग में जा सकते हो। ऐसे2 तुम ही कह सकते हो। यह थोड़े ही कहते कि मैं भगवान हूँ। बाप भी कहते हैं यह तो पतित है। इसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। तत त्वम्। नम्बरवार राजधानी होगा। वह अब स्थापन हो रहा है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।